ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

परिवार: एक इकाई

[1]Dr. Rekha Kumari [1]Dr. Deep Narayan Singh

[1]Veer kunwar Singh University Arrah Bihar

सार: मनुस्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और समाज में रहकर ही अपनी बाल्यावस्था में वह परिवार में भाषा व्यवहार पद्धति तथा सामाजिक प्रति मांगों को सीखता है। यह सीख किसी न किसी रूप में सार्थक परिवार के लिए उपयोगी साबित होते है। यह जनजातीय ग्रामीण और नगरीय सभी समुदाय धर्मों के मानने वालों तथा सभी संस्कृतियों में पाया जाता है औरआवश्यकता की पूर्ति करता है।

Email: rekhadn@1974gmail.com

Mobile: +91 9973044221

परिचय: परिवार समाज की प्राथमिक विद्यालय है। परिवार में साधारणतया पति, पत्नी और बच्चों के समूह होता है। सभी समाजों में बच्चों का जन्म और पालन पोषण परिवार में होता है। बच्चों का संस्कार करने और समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्य रूप से परिवार में होता है।[1]. इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। नर-नारी के यौन संबंध मुख्यत: परिवार के दायरे में निबद्ध होते हैं। औद्योगिक सभ्यता से उत्पन्न जनसंकुल समाजों और नगरों को यदि छोड़ दिया जाए तो व्यक्ति का परिचय मुख्यत: उसके परिवार और कुल के आधार पर होता है। संसार के विभिन्न प्रदेशों और विभिन्न कालों में यद्यपि रचना, आकार, संबंध और कार्य की दृष्टि से परिवार के अनेक भेद हैं किंतु उसके यह उपर्युक्त कार्य सार्वदेशिक और सार्वकालिक हैं। उसमें देश, काल, परिस्थिति और प्रथा आदि के भेद स एक या अनेक पीढ़ियों का और एक या अनेक दंपतियों अथवा पति-

 Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

पत्नियों के समूहों का होना संभव है, उसके सदस्य एक पारिवारिक अनुशासन व्यवस्था के अतिरिक्त पति और पत्नी, भाई और बहन, पितामह और पौत्र, चाचा और भतीजे, सास और पुत्रवधू जैसे संबंधों तथा कर्तव्यों एवं अधिकारों से परस्पर आबद्ध, अन्य सामाजिक समूहों के संदर्भ में एक घनिष्टतम अंतरंग समूह के रूप में रहते हैं।[2] परिवार के दायरे में स्त्री और पुरुष के बीच कार्यविभाजन भी सार्वत्रिक और सार्वकालिक है। स्त्रियों का अधिकांश समय घर में व्यतीत होता है। भोजन बनाना, बच्चों की देख रेख और घर की सफाई करना और कपड़ों की सिलाई आदि ऐसे काम हैं जो स्त्री के हिस्से में आते हैं।[3] पुरुष बाहरी तथा अधिक श्रम के कार्य करता है, जैसे खेती, व्यापार, उद्योग, पशुचारण, शिकार और लड़ाई आदि।[4] तब भी यह कार्यविभाजन सब समाजों में एक सा नहीं है, कोई बड़ी सामान्य सूची भी बनाना कठिन है क्योंकि कई समाजों में स्त्रियाँ भी खेती और शिकार जैसे कामों में हिस्सा लेती हैं। किंतु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वासवाले रक्त संबंधियों का समूह है जिसमें शादी और दत्तक प्रथा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। मनुष्य परिवार में ही जन्म लेता है अपनी बाल्यावस्था में वह परिवार में ही भाषा व्यवहार पद्धति तथा सामाजिक प्रति मांगों को सीख किसी न किसी रूप में परिवार सार्थक समूह है।[5] यह जनजातीय ग्रामीण और नगरीय समुदाय सभी धर्मों के मानने वालों तथा सभी संस्कृतियों में पाया जाता है।परिवार के चार बेसिक स्वरूप के उपरांत भी विभिन्न समाजों में इसकी संरचना में व्यापक विविधता दिखाई देती है । जनजातीय और कृषक समाजों में कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं इनमें बड़े आकार के अथवा संयुक्त परिवार पाए जाते हैं । औद्योगिक समाज व्यवस्था के अंतर्गत परिवार का आकार पति पत्नी और बच्चों तक सीमित रह गया है।[6] इसे समाज शास्त्रियों ने एक परिवार के दो पक्ष रखे हैं संरचनात्मक और संस्थागत। संरचनात्मक परिवार कुछ सदस्यों के निश्चित लक्ष्य होते हैं इस अर्थ में परिवार एक समूह है परिवार की संरचना के मूल में कुछ निश्चित नियम और कार्यप्रणाली होती है इस दृष्टि से परिवार एक संस्था भी होता है। समाज में पुत्र उत्पत्ति के लिए सामाजिक यौन संबंधों की स्वतंत्रता चाहे कमी रही हो लेकिन इस यौन संवाद की संज्ञा नहीं दी जा सकती की ओर संवाद मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी सही प्रतीत नहीं होता है। मातृवंशीय और मातृस्थानीय कबीलों में भी शासक वर्ग पुरुष है, किंतु नारी के अधिकारों तथा प्रतिष्ठा

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

की दृष्टि से पितृवंशीय और पितृस्थानीय कबीलों की अपेक्षा इनकी स्थिति प्राय: अच्छी है। कई पितृवंशीय कबीलों में भी नर और नारी का दर्जा लगभग समान है, तथापि अधिकांश कबीलों में पुरुष की अपेक्षा उसका दर्जा हीन है। कबीलों में विवाहविच्छेद और पुनर्विवाह का नियम है और इस संबंध से स्त्री और पुरुष को प्राय: समान अधिकार हैं। वास्तव में अधिकांश कबीले पितृवंशीय हैं और नारी को विवाह के बाद पुरुष के परिवार, कुटुंब और बस्ती में जाना पड़ता है, जहाँ पति के माता, पिता, भाई तथा अन्य रक्त संबंधी और मित्र होते हैं। वहाँ उसे पति के कुटुबं का अंग होकर उसे बड़े लोगों के अनुशासन में रहना होता है और पति के कुलाचार का पालन करना होता है। विवाहविच्छेद की अवस्था में नारी को अपने माता पिता को शरण लेनी पड़ती है। [7]मातृस्थानीय कबीलों में परिवार अधिक स्थायी दिखाई पड़ता है। यह रक्तसंबंधियों का नैसर्गिक समूह मालूम पड़ता है। बहुत कम कबीले ऐसे हैं जहाँ लड़के या लड़कियों को विवाह के पहले ब्रहमचर्य पालन का नियम हो। कुछ कबीलों में विवाह के पूर्व परीक्षण काल की व्यवस्था होती है। जौनसार बाबर के खसों में अभ्यागतों के स्वागत में परिवार की अविवाहित लड़कियों का संभोग के लिए प्रस्तुत करने की प्रथा है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परिवार का अस्तित्व नर नारी की वासनातृप्ति के लिए नहीं है, बल्कि परिवार द्वारा उसे मर्यादित किया जाता है भारत मुख्यत: कृषिप्रधान देश है और यहाँ की पारिवारिक रचना प्राय: कृषि की आवश्यकताओं से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त भारतीय परिवार की मर्यादाएँ और आदर्श परंपरागत है। किसी अन्य समाज़ में गृहस्थ जीवन की इतनी पवित्रता तथा पिता, पुत्र भाई भाई और पति पत्नी के इतने स्थायी संबंधों का उदाहरण नहीं मिलता। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और जतियों में सांपत्तिक अधिकार, विवाह तथा विवाहविच्छेद आदि की प्रथा की दृष्टि से अनेक भेद पाए जाते हैं तथापि संयुक्त परिवार का आदर्श सर्वमान्य है। संयुक्त परिवार में संबंधियों का दायरा पति, पत्नी तथा उनकी अविवाहित संतानों से भी अधिक व्यापक होता है। बहुधा उसमें तीन पीढ़ियों और कभी कभी इससे भी अधिक पीढ़ियों के व्यक्ति एक घर में एक ही अनुशासन में और एक रसोईघर से संबंध रखते हुए सम्मिलित संपत्ति का उपभोग करते हैं और परिवार के धार्मिक कृत्यों तथा संस्कारों में भाग लेते हैं। यद्यपि मुसलमानों और ईसाइयों में संपत्ति के नियम भिन्न हैं, तथापि संयुक्त परिवार के आदर्श, परंपराएँ और प्रतिष्ठा के कारण इन

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

सांपत्तिक अधिकारों का व्यावहारिक पक्ष परिवार के संयुक्त रूप के अनुकूल ही रहता है। संयुक्त परिवार का मूल भारत की कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त प्राचीन परंपराओं तथा आदर्श में है। रामायण और महाभारत की गाथाओं द्वारा यह आदर्श जन जन तक पहुँचते हैं। कृषि ने सर्वत्र ही पारिवारिक जीवन की स्थिरता प्रदान की है। अत: भारतीय समाज में परंपरा से उत्पादन कार्य, उपभोग और सुरक्षा की बुनियादी इकाई परिवार है।

निष्कर्ष: संयुक्त परिवारप्रणाली यद्यपि बहुत प्राचीन है, तथापि इसके आंतरिक स्वरूप में बहिर्विवाह, उत्तराधिकार तथा सांपत्तिक अधिकार के नियमों में, कालक्रम में परिवर्तन होता रहा है। भारत में भी औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप नई अर्थव्यवस्था और नए औद्योगिक तथा आर्थिक संगठनों का आरंभ हो चुका है। यातायात तथा संचार के नए साधन उपलब्ध हो रहे हैं और नगरीकरण तीव्रता से हो रहा है। पाश्चात्य विचारधारा और पाश्चात्य ढंग की शिक्षा दीक्षा तथा आदर्शों का प्रभाव भी कम नहीं है। विशेषकर स्वाधीनता के बाद विवाह, उत्तराधिकार, दत्तकग्रहण और सांपत्तिक अधिकार के संबंध में जा कानून लागू किए गए हैं उन्हें परिवार की संयुक्त प्रणाली के लिए हानिकारक समझा जाता है। इसी प्रकार आयकर के नियम भी इसके प्रतिकूल पड़ते हैं। वयस्क मताधिकार राजनीतिक लोकतंत्र भी संयुक्त परिवार के एकसत्तात्मक तथा व्यष्टिपरक अस्तित्व पर प्रहार कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में जब अर्थव्यवस्था और उत्पादन के साधनों में भी बुनियादी परिवर्तन हो रहा है, परिवार के शासन, रचना और कार्यों में हेरफेर होना अवश्यंभावी है और वह परिलक्षित भी हो रहा है। किंतु अभी यह कहना कठिन है कि परिवार का संयुक्त रूप समाप्त हो रह है। नगरों और ग्रामों में संयुक्त परिवार पहले से कम हो गए हैं, इसका कोई प्रमाण नहीं है। परिवर्तन के संबंध में विद्वानों में मुख्यत: दो प्रकार का विचार है। एक विचार के अनुसार परिस्थिति के प्रभावस्वरूप परिवार में कतिपय परिवर्तन होने पर भी उसका संयुक्त रूप नष्ट नहीं हो रहा है। दूसरे विचार के अनुसर औद्योगिक सभ्यता भारत में भी संयुक्त परिवार को बहुत कुछ उसी युगल परिवार के रूप में उपस्थित करेगी जो अमरीका तथा यूरोप में प्रादुर्भूत हुआ है। वर्तमान पारिवारिक विघटन एंव परिवर्तनों को इस प्रक्रम की आरंभिक अवस्था बताया जाता है।

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

संदर्व सूचि:

1. मानव और संस्कृति: डॉ श्याम चरण दुबे: पृष्ठसंख्या 101
2. रविंद्र नाथ मुखर्जी : भारतीय सामाजिक संस्थाएं पृष्ठसंख्या 130
3. श्रीराम शर्मा: लोक साहित्य का सामाजिक -सांस्कृतिक अध्ययन
4. डॉ विद्या भूषण और डीआर सचदेवा: समाजशास्त्र पृष्ठ 124
5. वही पृष्ठ 124
6. डॉक्टर रमन भाई पटेल सातवें दशक के हिंदी उपन्यास पृष्ठ 25
7. डॉ एस बी महाजन आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में काम मूलक संवेदना पृष्ठ 117

Copyright • 2020 Authors